शोध मंथन Vol. XII No.I Jan.-March 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

मध्य हिमालयी रंग्पा जनजातीय महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश

डॉ0 निरंजना शर्मा
एसो0 प्रोफे0,
एल0 एम0 पी0 जी0 कालेज ऋषिकेश, देहरादून
Email:dr.niranjanasharma@gmail.com

प्राप्तिः 26.01.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

सारांश

भारत विविधताओं का देश है, खान–पान, रीती–रिवाज, वेशभूषा, भाषा, भौगोलिक भिन्नताओं के कारण यह अतुलनीय है, इसी सन्दर्भ में भारत के जनजातीय समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि प्रारम्भ से ही रहस्यमयी रही है। यद्यपि वर्तमान समय में शहरीकरण, नगरीकरण, आधुनिकिकरण, संचार व समप्रेषण, यातायात, शिक्षा रोजगार स्वास्थ्य जैसी अनेक मौलिक अवधारणा ने इसकी जीवन शैली में आमूल–चूल परिवर्तन किये है। जनजातियों के क्रम में भोटिया जनजाति की अपनी मौलिक विशेषताएं हैं। हिमाचल, कश्मीर तथा उत्तराखण्ड में यह जनजाति विद्यमान हैं स्वयं को किरात के वंशज बताने वाली यह जनजाति अर्ध–घुमन्तु प्रवृत्ति की है जो कि ग्रीष्मकाल तथा शीतकाल में अपना आवास परिवर्तित करती रहती हैं। उत्तराखण्ड मे चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ जिलो में इनका निवास है, वे स्वयं को रवस राजपूत मानते हैं। जनजातियों की उपजाति में मारछा, तोलछा, जौहरी, शौका, जाड़, छापरा आदि प्रमुख हैं। थारू, जौनसारी, बोक्सा, राजी जातियों को 1967 में जनजाति घोषित किया गया है।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपद चमोली मे मारछा व तोलछा भोटिया जनजातियां है। नीती व माणा घाटी में रंग्या जनजाति की महिलाएं आर्थिक व सामाजिक रूप से अपने को प्रारम्भ से ही दृढ़ता प्रदान करती हैं। परम्परागत सामाजिक संरचना तथा पितृसन्तात्मक व्यवस्था के कारण इनकी सामाजिक, राजनीतिक जागरूकता में कमी है किन्तु सामाजिक व्यवस्थाओं के स्वरूप में परिवर्तन के कारण शिक्षा, धर्म, संस्कृति के संरक्षण सामाजिक सुधारों में नेतृत्व क्षमता आर्थिक आधार पर सुदृढ होने की ललक राजनीतिक सहभागिता आदि विभिन्न आयामों मे इन्हें मानसिक, बौद्धिक दृढता प्रदान की है। यह एक जीवन्त मानव समूह है।

वैश्विक स्तर पर विभिन्न भागों में विशेषतः जंगली पर्वतीय, पठारी, रेगिस्तान आदि में अवसित अनेक जनजातियां अपने क्रियाकलापों, धार्मिक विश्वासो विचित्र व आकर्षक भेष–भूषा

के द्वारा एक विशिष्ट प्रकार की संस्कृति का सृजन किये हुये हैजो अतीत की पौणाणिक, संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रही है। ''जनजाति ऐसी टोंलियों का समूह है जिसका एक सानिध्य वाले भूखण्ड अथवा भूखण्डों पर अधिकार है जिनमें एकता की भावना संस्कृति में गहन समानता बारम्बार सम्पर्क तथा कतिपय सामुदायिक हितों में समानता हों'' इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया के अनुसार एक जनजाति समान नाम धारण करने वाले परिवारों का संकलन है जो समान बोली बोलते है, एक ही भूखण्ड पर रहने का दावा करते है अथवा दखल रहते है, जो साधारण अन्तर्विवाही न हो'' नातेदारी व्यवस्था, समान भूखण्ड, समभाषा संयुक्त स्वामित्व एक राजनीतिक संगठन आन्तरिक संघर्ष की अनुपस्थिति आदि सभी को जनजाति की मुख्य विशेषताओं रूप में स्वीकार किया गया है।

समय की गति व वैज्ञानिक प्रगति के प्रभावों से सुरक्षति जनजातियों ने अपना पृथक संसार बनाया है जिसमें पृथक अर्थव्यवस्था धर्म, कानून वैवाहिक सम्बध जीवन चक्र संस्कार है। जिनकी समानता अन्य समाजों से नहीं की जाती है। दुर्गम एवं सुविधा रहित क्षेंत्रों में आवासित मानव–समूह जिसकी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संरचना सम्य समाज से पृथक है उसे जनजाति की संज्ञा से अभिहीत किया जा सकता **है। निर्माणक संस्कृति तथा आधुनिक विससित संस्कृति के मध्य जनजातिय संस्कृति सेतु का कार्य करती है** भोगौलिक प्राकृतिक कारको का सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना स्वआधारों पर विकसित निकटवर्ती क्षेंत्रों से पूर्णतः भिन्न मानव ऋंखला का प्रतिनिधित्व करने वाली वलीय जनजातियां सभी के भिन्न आकर्षण का केन्द्र है। उत्तराखण्ड जनजातियों की दृष्टि से सामान्य राज्य है। राजी, भोटिया, वोक्सा, थारू तथा जौनसार भावर आदि यहां की प्रमुख जनजातियां है।

उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति एक परम्परा का अविष्कार है प्राचीन साक्ष्यों में भोटियां उल्लेच नही मिलता यद्यपि अर्वाचीन स्त्रोतों मे **''भोटर''** भोट देश महाभोट, एवं भोट नाथ तिब्बत के सन्दर्भ में आते है। इस सम्बोधन का कारण तिब्बत में बौद्ध धर्म के अनुयायियों का आवास है बौद्ध शब्द कालान्तर में **''बोद''** फिर भोट के रूपान्तरित हो गया। उत्तराखण्ड की परम्परा में तिब्बत को हूण देश तथा तिब्बतियों को हूणि कहा जाता है व्यवहार में भी स्थानिया शब्दावली मे **''भोट''** नही पाया जाता **''मालूशाही''** नामक प्रसिद्व लोकगाथा में तिब्बत को **''भोटिया''** जन को शौक कहा गया है। तिब्बती लिपि एंव भाषा में **''ल्ह–व्ह– नगरजै धुर्व पा''** उत्कीर्ण है। जिसका हिन्दी संस्कृत पर्याय 'देव भट्टारक नागराज है। अनेक ऐसे प्रमाण है जिससे स्पष्ट है कि भारत व तिब्बत के मध्य प्राचीन समय से ही राजनीतिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में **''भोटिया शब्द का प्रयोग नेपाली अभिलेख में पाया जाता है। ट्रेल द्वारा प्रस्तुत भोटिया महल की सांख्यिकी रिपोर्ट(1832) से प्राप्त हुआ संस्मरण इस तथ्य की पुष्टि करता है यह उल्लेखनीय है कि पुर्तगाली पादरी आन्द्रे''** भोटिया को एक पृथक प्रजाति के रूप में दर्शाते है। परन्तु उन्हें किसी नाम से संबोधित नही करते, स्वाभाविक निष्कर्ष निकलता है कि उस समय इस समुदाय की पृथक स्थानीय पहचान नहीं थी। अंग्रेजों के उत्तराखण्ड में उपनिवेश स्थापित करने से पूर्व भोटिया अपनी पहचान स्थानीय निवासियों के अनुरूप करते थे, जैसा कि कैप्टन रेंपर के 1807 के **'माना'** गांव के निवासियों

के वर्णन से स्पष्ट होता है जिसमें स्पष्ट लिखा है इसमें **''सूर्यवंशी''** एंव **''चन्दवंशी''** राजपूतो की शाखायें रहती है। इनकी आकृत्ति **''तार्तार** या बुटिया'' से मिलती है।, बहुत सम्भावना है। कि इनका मूल उन्ही से हो ऐसा प्रतीत होता है कि मुख मुद्रा तथा तिब्बतियों के साथ धनिष्ठ व्यसवारिक सम्बन्धों के कारण ही यूरोपीयन समुदाय में उत्तराखण्ड के इस सीमान्तवासी समुदाय को कालान्तर में भोटिया से रूप में आत्मसात कर जिया हो। अतः उत्तराखण्ड के इतिहास में भोटिया परम्परा का अविष्कार कर उनकी विशिष्ट पहचान स्थापित कर दी गयी। यद्यपि ब्रिटिश अधिकारी इस वात से भिन्न थें कि उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में यहां के सीमान्तवासी समुदाय की 'भोटिया के रूप में पहचान त्रुटिपूर्ण है। ''जिनको हम भोटिया कहते है वे वास्तव में भोटिया नहीं है''।

उत्तराखण्ड से सीमान्तवासीयो ये कौन लोग है? इनकी एतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है? इस विषय में हमारी सूचना सीमित है। वस्तुतः तिब्बत के रहस्यमह इतिहास, सस्कृति, प्राकृतिक संसाधन, भूगोल एवं भू राजनीतिक स्थिति के प्रति अत्यधिक आकर्षण ने भारत तिब्बत सीमा में उत्तराखण्ड स्थित इस ऐसे एकमात्र मानव समुदाय को हाशिये में रख दिया जो कि सटे हुए पश्चिम तिब्बत के सम्बन्ध में प्रमाणिक सूचना का प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण व परम्परागत स्त्रोत्र रहा है। यद्यपि वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, शहरीकरण तथा इस समुदाय की स्वंय अपनी संस्कृति कसे संरचित रखने के कल्पना व इच्छा शक्ति ने शासन तथा सरकारो का ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट किया है। उत्तराखण्ड के सीमान्तवासी इस समुदाय का भोटिया नाम से सम्बोधन शासकीय अभिलेखों मे सबसे पहले नेपाल के गौरखा शासको की राजाज्ञाओं (राजवंशी वि0सं0 33–39) में पाया जाता है। शेरिंग प्रयत्क्ष प्रशासक था जिसने स्वीकार किया कि जिस समुदाय को भोटिया कहते है वह इस सम्बोधन को अच्छा नही मानते। वह उनको दो प्रमुख भागों बाटता है तथा ''पश्चिम शाखा जिसके अन्तर्गत माना घाटी में रहने वाले केवल **माछा** नीति घाटी में रहने वाले **टोल्छा** एंव मार्छा और ऊंटाधुरा दर्रे के पास रहने वाले अधिकाशतः शौका (अन्यथा रावत)'' हैं। पूर्वी शाखा के **''भोटिया''** दार्मा परगमा मे रहते है। इनमें **दार्मा पट्टी** मे रहने वाले **नियो या दार्मा** दरों का प्रयोग करते है **चौदास व व्यास पट्टी** के भोटिया लंक्प्यालेख, मंग्शन लिपुलेख दर्रो का और बहुधा नेपाल के रिंकर दर्रे का भी प्रयोग करते आये है। सांस्कृतिक दृष्टि से **पश्चिम भोटिया** अपने को सब भोटियों में श्रेष्ठ मानते है तथा **पूर्वी भोटियों** के साथ खान पान व वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रखतें है यहां पर यह भी विचारणीय है कि शेंटिग से पूर्व एटकिशंन ने माना व नीति के भोटियों को **मार्छा** बताया तथा **माना व नीति** धाटी धाटियों के उन निवासियों को जिनमें भोटिया नही रहते क्रमशः **''दुर्याल''** व टोल्छा कहते हुए उनको **खसिया** माना है

वस्तुतः एटकिन्सन ने ही सर्वप्रथम **''भोटिया''** जन की सामाजिक व्यवस्था का रोचक एंव अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन किया, साथ की टिहरी रियासत के ''जड़'' को इस समुदाय में सम्मिजित किया। विदेशी एंव भारतीय लेखकों के जिनमें भोटिया लेखक भी सम्मिलित किया। विदेशी एवं भारतीय लेखकों के जिनमें भोटिया लेखक भी सम्मिलित है। विचार यह दर्शातें है कि उत्तराखण्ड की अन्य जातियों की तरह भोटिया का मूल पृथक–पृथक है वैज्ञानिक दृष्टि से

यह कहना समीचीन होगा कि उत्तराखण्ड का भोटिया समुदाय दीर्धकाल से दुर्गम हिमालयी प्रवेश में निवास करने के कारण रूप टंग व बनावट में तिब्बतियों के सदृश है। तो इसका कारण इस क्षेत्र की जलवायु व वातावरण भी है विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है जो मनुष्य को उन्नति के मार्ग में बढ़ने के लिए सहायक होती है। अतः लोकोपयोगी सामाजिक व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए वंचित विकास व सही दिशा का होना निश्चित है। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहां विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, संस्कृति के लोग एक साथ निवास करते है। जनजातिय संस्कृति के संवाहक प्राकृतिक वातावरण में निवास करते है प्रकृत्तिव इनके मध्य एक नैसर्गिग तारतम्य स्थापित है। उत्तराखण्ड की जनजातियों के पिछड़ेपन के अनेक कारक है। जिनमें आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक है। जनजातिय समाजो के अध्ययन को केन्द्र मानवशास्त्र व समाजशास्त रहा है। यद्यति इस तथ्य को स्वीकार किया गया है कि सामाजिक संरचना को समझने की उत्सुक्ता है। रोंग्या जनजाति उत्तराखण्ड के पश्चिम जनपदों चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ तथा बागेश्वर मे फैली हुई है।

सामाजिक जागरूगता के विकास में महिलाओं की सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है वह पुरूषों के साथ सहयोग के रूप में हो या पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के रूप में, मुख्य तथ्य यह है कि समाज में महिलाओं को सम्मानीय स्थान मिला या उनकी उपेक्षा की गयी। भारतीय समाज की परम्परा में परिवार पितष्–सत्तात्मक रहा जिसमें स्वतः पुरूष को वर्चस्व रहा तथा यह संस्कृति सामाजिक व्यवस्था का अंग बन गयी, इस अवधारणा में बदलाव अंधिकाशतः दिखाई नही देता किंतु यह निर्तिवाद रू‍प से कहा जा सकता है कि समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है जो कि सामाजिक व्यवस्था में दृष्टिगोचर हो रहा है महिला जागरूगता को इसी सन्दर्भ में देखा जा सकता है। आधुनिकता के साथ–साथ पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से इस विरासत को बचाना एक चुनौती है। क्योंकि यही सांस्कृतिक विरासत रंग्पा महिलाओं की अमूल्य धरोहर है, पहचान है। धर्म व संस्कृति के प्रवाह की सांस्कृतिक परम्पराओं के रूप में समाज को जागरूक करना आवश्यक है। रंग्पा महिलाये इसे वचाने हेतु प्रयासरत है। मांगलिक गीतो व मांगलिक नृत्यों व अपनी पारम्परिक वेशभूषा को आज भी रंग्या महिलाओं ने धरोहर के रूप में समेटा है तथा उसे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय मंचो पर स्थान दिलाने के लिए व प्रयासरत है।

शिक्षा

शिक्षा के द्वारा वास्तविक प्रगति सम्भव है किसी भी समाज की जागरूगता में मूल में शिक्षा ही महत्वपूर्ण आधार है। रंग्या महिलाओं में शैक्षिक प्रगति का आंकलन आवश्यक है। विद्यालयों में प्रवेशचारिक शिक्षा के माध्यम तथा सरकार द्वारा चलायी गयी योजनाओं में उनकी जगरूगता व सहभागिता मुख्य केन्द्र है। शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के लिए जनजातिय क्षेत्रों के लिए विशेष योजनाये बनायी गयी है जिससे महिलाओं में साक्षरता का प्रतिशत वढा है। नीती व माणा धाटी में सीमांत क्षेत्र को प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा से जोड़ने के प्रयास सरकारो द्वारा किये है। तकनीकी शिक्षा, उच्च शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र मे भी रंग्या महिलाओं की शिक्षा में अनवरत वृद्धि हुई है। यातायात व संचार साधनों की सुगमता भी इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। शिक्षा में जागरूगता का प्रभाव सामाजिक जागरूगता एवं विकास के अन्य

क्षेत्रो पर पड़ने से समाज में क्रान्तिकारी परिर्वतन दिखायी दिया। अध्ययनरत छात्रांए सामान्य खेलों के साथ साहमूहिक खेलो में रूचि के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के स्कीईंग प्रमियोगिता में भाग लेकर विशिष्ट स्थान प्राप्त करती है पर्वतारोहन के क्षेत्र में बछेन्द्रीपाल ने न केवल रंग्या जाति के गौरव को बढ़ाया अपितु महिलाओं को प्रेरणा भी दी।

धर्म संस्कृति का संरक्षण

सीमान्त जनपद धार्मिक आस्था का प्रतीक है मुख्यः रूप से शिव व पार्वती जिन्हे प्रकृति के सौन्दर्य का देवता माना गया है से अभिभूत रहा है। रंग्पा जाति के धार्मिक रीति–रिवाजों पर हिन्दू धर्म की छाप स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। पूजा पद्धति संस्कार, कर्मकाण्ड एंव पौरोहित्य कर्म तथा शिव नन्दा (पार्वती) भगवती की पूजा अराधना होती है भगवती की पूजा में बली चढ़ाने की परम्परा का देवो को प्रसन्न करने के लिए नृत्य, विशेषतः पाण्डव व बग्वाल नृत्य यहां की महान परम्परा है। धार्मिक उत्सवों में नृत्य व महिलाओं द्वारा परम्परागत वस्त्र जिसमें घुंघुटी तथा भवाआंगडी की आकषर्क पोषाक के साथ मधुर गीत की स्वरलहरियां चाचंडी, झुमेलो, चौफुला आदि आकर्षण का बिंदु है। धार्मिक सांस्कृतिक व वैवाहिक उत्सह की महिला व पुरूष हर्षोउल्लास के साथ मनाते है। पुरूषों में पासा व जुवा आज भी किसी सांस्कृतिक–धार्मिक उत्सवों में मनोरंजन के लिये खेला जाता है, **धार्मिक** उत्सवों में नृत्य वाद्य यंत्रों में ठोल–दमाऊ सांस्कृतिक परम्पराओं में सम्मिलित है पौंणा नृत्य व महिलाओं द्वारा परम्परागत वस्त्र जिसमे घुंघटी तथा लवा आगी की आकर्षक पोषाक के साथ मधुर गीत की स्वर लहरियां, चाचडी, झुमेलों, चौफुला आदि नृत्य आकर्षक का केन्द्र है। महिला मंगल दलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन विशेष अवसरों पर किया जाता है। 15 अगस्त के दिन प्रत्येक वर्ष इमफूं थार में सांस्कृति कार्यक्रमों का आयोजन उत्सव की भांति होता है इसमें महिलाओं की सहभागिता के साथ–साथ नगरीय व शहरी क्षेत्रों से भी रंग्पा जनजाति के लोगों की उपस्थिति सराहनीय है। अलग–अलग गॉव से सांस्कृतिक झांकियां निकालने की परम्परा है जिसमें रंग्पा जनजाति की संस्कृति, स्वतन्त्रता सेनानियों की स्मृतियां तथा सेवाओं की शौर्यगाथाओं का प्रर्दशन उल्लेखनीय व अविस्मरणीय है।

समाजिक सुधारों मे सहभागिता व जागरूगता

रंग्या महिलाओं का जीवन भी अन्य समुदाय की महिलाओं की भांति परिवार के भरण–पोषण तथा अन्य उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में व्यतीत हुआ। किन्तु आज वह अपने अधिकारो के प्रति मुखर है, प्रगतिशील है। गौरा देवी चिपको आन्दोलन की नैत्री ने सीमान्त जनपद की पहचान को विश्व तक पहुचाया। मद्य निषेध, पर्यावरण संरक्षण, साक्षरता, जंगलो के दोहन तथा जंगलों को आग से बचाने की मुहिम में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है रंग्या जाति में गुरूभै–गुरूबैणी जैसी सामाजिक संस्था है, नीतिमाणा धाटी कल्याण समिति सीमान्त वैल फैयर एसोसिएसन आफ देहली (स्वाद) जैसी संस्थायें सीमांन्त जनपद के रंग्या जनजातिय समुदाय की ऐसी संस्थायें है जो सामाजिक व सास्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से जनजागरूगता तथा जनचेतना को वढ़ावा देती है शैक्षिक योग्यता में विस्तार होने के कारण सरकारी व नीति

सेंवा क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व वढ़ा है। शिक्षा स्वास्थ्य, रक्षा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट प्रतिभा व कार्यकुशलता का परिचय रंग्या महिलाओं ने दिया है। सामाजिक रीति–रिवाज संकोच, अंधविश्वास नारीत्व की गरिमा को बचाने की भावना ने रंग्या महिलाओं को अपने अधिकारो, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं होने दिया। 16वीं शदी के बाद संसार में यूरोपियों के प्रभुत्व का प्रसार प्रारम्भ होने से नीति घाटी की रंग्या महिलाओं की सम्यता व संस्कृति पर प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो गया है 20वीं शदी में दो दशको के उपरान्त सामाजिक व्यवस्था में परिर्वतन दृष्टिगोचर हुए धर की मालकिन या घरवारली का प्रभाव कम होने से परिवार की महिलाएं स्वयं के लिए जागरूग बनने लगी, सजाह, मशविरा स्वच्छता बच्चों के लालन पालन में महिलाओं का स्वंय का रखल होने लगा तथा सहभागिता की भावना जाग्रत हुई 1962 के चीन के भारत आक्रमण ने नीती–माणा के रंग्या जनजातिय स्वरूप में परिवर्तन जा दिया। कठोर रूठिवादिता को नकारते हुए विचार–विमर्श, चर्चा परिचर्चा में भागीदारी बढ़ने से महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक जीवन स्तर में सुधार हुआ।

समाजिक जागरूकता की परिधि में धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, भोगोलिक तथ्यों को सम्मिलित किया जाता व सामाजिक सहभागिता रंग्या जाति की विशेषता रही है सामाजिक समस्याओं के प्रति समवेत प्रयास, एक दूसरे की उन्नति में सहभागिता उनकी श्रेष्ठ सामाजिक जागरूता ही है।

आर्थिक क्षेत्र में जागरूगता

20वीं शदी से पूर्व रंग्या समाज में संयुक्त परिवार का महत्व अधिक रहा, परिवार की संख्या या अधिक संतानों की संरचना हो, वह परिवार भाग्यशाली माना जाता है। क्योकि पशुपालन, झूम की कृषि एवं 19वीं शदी के उपरान्त रंग्या क्षेत्र के उत्तर तथा दक्षिण के दो–एक क्षेत्रों से विनिमय तथा व्यापार की बढ़ती सम्भावना से भी जनशक्ति की आवश्यकताएं बढ़ी है रंग्या परिवार पूर्व से पितृसत्तात्मक के बाद भी मातृ सत्तात्मक के अधीन आता है। परिवार की सत्ता वयोवृद्ध महिला के हाथ में रहती है तथा प्रवन्ध वयोवृद्ध पुरूष के हाथ में रहता है। 20वीं शदी के मध्य तक रंग्या समाज में पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार पाया गया है पुरूष कृषि, पशुपालन तथा खाद्य समाग्री व आर्थिक संसाधन जुटाने तक ही अपना दावल रखते थें, महिलायें (मालकिन) परिवार उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अग्रणी थी जिनके अनुशासन का प्रभाव परिवार की अन्य महिलाओं को उनके दिनी–दैनिक अधिकारो से भी वंचित करने में देखा गया।

आधुनिक परिवेश में आर्थिक क्षेत्र में हो रही प्रतिस्वर्धा ने अनगिनत संभावनाओं के द्वार खोल दिये है नवीन उद्योग ने वर्तमान समय में भी विशेषतः रंग्या महिलाओं द्वारा उत्पादित उत्पादों से प्रभावित है। नमक के व्यवसाय के साथ तिब्बत से धी ऊन चबर गाय की ऊन से बना पसमीना, कपड़े आदि के व्यापार के साथ–साथ आर्थिक सामर्थ्य वढ़ाने के लिए हस्तशिल्त, कालीन, ऊन से सम्बन्धित वस्तुएं लवा, पांवी पटू आदि को अपना व्यवस्य वनाया। वहीं राजमा, आलू, चौलाई फाफर आदि फसलों को अपनाया। आडू, खुमानी सेब आदि का व्यवसाय भी प्राथमिकता में है। विशिष्ट हस्तलिपि को महिलाओं ने लघु उद्योग व रोजगार के रूप में अपनाया है। उत्तराखण्ड

के ओद्योगिक मेलों में पहाड़ी अंचलों से लेकर महानगरो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लधु उद्योगों तथा एन0जी0ओ0 के माध्यम से निर्मित हस्तशिल्प को ख्याति प्राप्त है अपने स्थानियान लद्यु उद्योग की पहचान बनाने रावते हुए उनकी गुणवत्ता बनाये रखने में महिलाओं की भूमिका अहम है पयर्टन यात्रा तथा सरकार की विभिन्न योजनाओं के कारण यहां के उत्पादो की विशिष्टता तथा संस्कृति का प्रचार–प्रसार हो रहा है। इसके अतिरिक्त भेड़ पालन तथा वन औषधियों तथा स्थानीय उपजों की व्यवसाय का हिस्सा बनाया है पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए धीरे–धीरे आवासीय सुविधाओं के लिए भी सीमान्त जनपद के दूरस्थ इलाके प्रयत्नशील है।

स्वास्थ के प्रति

सीमान्त हिमालय क्षेत्र अकलन्दा की ऊचारर धाटी की वायु शीतप्रधान है यह धाटी वनओषधियों से परिपूर्ण है शुद्ध जल, वायु, पौष्टिक भोजन, फल, मांस का उपयोग विशेष प्रकार की चाय (ज्या) कठोर शारीरिक परिश्रम, संघर्ष व अभाव में जीवन जीने की सकारात्मक दृष्टिकोण, शुद्ध पर्यावरण, भेड़ के ऊन से निर्मित वस्त्रों के प्रयोग तथा दृढ़ मानसिक संकल्प ने रंग्या महिलाओं को अधिक सामर्थ्यवान, शारीरिक व मानसिक रूप से अन्य पहाड़ी महिलाओं की तुलना में जो कि अपेक्षाकृत अधिक सुविधाओं में जीवन यापन कर रही है सक्षम बनाया है। आधुनिकता के प्रभाव से पर्यावरण प्रदूषण अनियमित जीवन तथा उपभोगतावादी सम्यता के कारण अनेक बीमारियों अपना विस्तार कर रही है। रंग्या महिलाये अपने स्वास्थय के प्रति परम्परागत वनोषधियों द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा के साथ–साथ आधुनिक चिकित्सा को अंगीकार कर रही है। स्वास्थय लाभ के लिए आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक तथा योग शिक्षा का अनुकरण कर रही है। स्वास्थय के प्रति जागरूक होने के कारण स्वस्थता मृत्युदर में कमी के आकड़ो में उनका औसत सबसे श्रेष्ठ है औसत आयु में भी महिलायें अग्रणीय है।

राजनीतिक सहभागिता तथा जागरूकता

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है लोकातत्रिंक प्रक्रिया सरकार के प्रत्येक क्षेत्र में देश के राजनीतिक जीवन की प्रकृति को स्पष्ट करती है। ग्रामीण हितो का प्रतिनिधित्व बहुत बड़े स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से होता है। आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में राजनीतिक अभिवृत्तियों का महत्व अधिक है। साथ ही राजनीतिक संरचना पूर्णतः समाज के प्रत्येक वर्ग की रूचियों, संस्कृति, संचेतना, अभिवृत्तियों के अभाव में पूर्णतः अधूरी है राजनीतिक ज्ञान व राजनीतिक सहभागिता दो ऐसे कारक है जिनमें जागरूकता का सहज आंकलन किया जाता है। रंग्या जनजाति के सन्दर्भ स्पष्ट किया जा सकता है कि यहां प्राचीन समय से ही जातियां आक्रान्ति होकर आती रही है। तथा उनका समस्त जातियों से समिश्रिण होता गया। स्वभाव से शान्त घुमक्कड़, व्यापारी पशुचारक के रूप में जीवन यापन करने वाली इस जनजाति पर स्वतन्त्रता से पूर्व राजनीति का महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा राजनीतिकरण स्वतन्त्रता के बाद ही हुआ, स्वतन्त्रता से पूर्व रंग्या जनजाति एक सीमित क्षेत्रान्तर्गत अपनी आजीविका हेतु विनियम व्यापार से सम्बन्धित थी। यातायात व संचार के अभाव तथा दूरस्थ व दुर्गम स्थानों में निवास करने के कारण आजीविका के संसाधन खोजने में ही अपना समय व्यतीत करते थे तथा एक

स्थान से दूसरे स्थान प्रवास की प्रक्रिया वर्ष में 3 या 4 माह तक चलती थी। 1962 के बाद तिब्बत व्यापार भी निषेध हो गया जिससे जनजातिय समाज का प्रवास भी बाधित हुआ। अतः जीविकोपार्जन के साधनो की खोज में उन्हें अन्यत भ्रमण करना पड़ा। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तगर्त नवीन शिक्षा योजनाओं के लागू होने से इस क्षेत्र में शिक्षा का सूतपात हुआ। शिक्षा के विकास व अन्य संस्कृतियों क सम्पर्क में आने के कारण व्यक्ति में राजनीतिक चेतना का संचार हुआ तथा धीरे–धीरे व्यक्ति का रूझान राजनीतिक गतिविधियों की तरफ होने लगा।

राजनीतिक सामज का क्षेत्र सब क्षेत्रों को प्रभावित करता है। सामाजिक जागरूकगता तथा राजनीतिक जागरूगता एक दूसरे के पूरक है। राजनीति सत्ता प्राप्त करने का माध्यम है। सत्ता द्वारा संसाधनो की सुलभता का जागरूगता से गहरा सम्बन्ध है। लोकसभा तथा विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33–1 आरक्षण की मांग लम्बे समय से की जा रही है। जिसका मूल्य उद्देश्य महिलाओं के लिए भागीदारी करने हेतु आरक्षण की व्यवस्था की गयी है। महिला मंगलदल स्वंय सेवी संगठनो द्वारा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास किया जा रहा है। नेतृत्व क्षमता के साथ–साथ रंग्या महिलाएं मताधिकार का प्रयोग तथा सामाजिक दायित्वों व अधिकारों के प्रति भी जागरूक है। महिला आरक्षण व्यवस्था ने स्वतः ही राजनीतिक जागृति के प्रयास को सराहनीय बनाया है। जनजातिय समाज की महिलायें विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ मिलकर ब्लाक प्रमुख, क्षेत्र प्रमुख, ग्राम प्रधान, ग्रामपंचायत प्रमुख तथा महिला समूहों के माध्यम से राजनीतिक पदों पर भागीदारी निभा रहीं है। सामाजिक परिर्वतन की प्रक्रिया सामाजिक विकास की गतिशीलता को बनाये रखती है। सामजिक गतिशीलता, सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति, सांस्कृतिक विकास, सामाजिक उन्नति, राजनीतिक चेतना किसी भी समाज के बदलते स्वरूप का मापदण्ड़ होते है। रंग्या जनजाति की सामाजिक परिर्वतन की प्रक्रिया में राजनीतिक करण का महत्वपूर्ण योगदान है। विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप इनके भोजन, वस्त्र, मकान शिक्षा परिवहन, चिकित्सा, मनोरंजन, सुरक्षा, व्यापार, उद्योग बैंक सुविधा दूरसंचार, डाक व्यवस्था, की सुविधायें राजनीतिक चेतना का परिणाम है। महिलाओं की भागीदारी व उपयोगिता जनजातिय क्षेत्रों में बढ़ रही है नीती घाटी के जनजातिय समाज की अनेक राजनीतिक समस्यायें भी है यथा– अशिक्षा व अनुभव के अभाव में राजनीतिक जागरूकता का अभाव है। अन्य के प्रभाव में मतदान का प्रयोग किया जाता है, विषम भौगोलिक क्षेत्र होने के कारण 70 प्रतिशत मतदाता मतदान का प्रयोग नही करते विशेषत : महिलाये, दूरस्थ क्षेत्र मे चुनाव प्रचार का अभाव, सर्वेक्षण के आधार पर रंग्या महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता तथा सहभागिता का प्रतिशत 75 प्रतिशत है। सामान्यतः यह तथ्य सत्य व स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रचार रोजगार की सम्भावनाओं के फलस्वरूप शहरों की ओर आकर्षण, नवीन औद्योगिक संरचना, आधुनिकिकरण आदि अनेक ऐसे कारक है जिन्होनें सीमान्त जनपद के विकास के साथ–साथ महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक अधिकारों में भी आमूलचूल परिवर्तन किया है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा, धर्मसंस्कृति मनोरजंन सामाजिक सुधारों में सहभागिता (नारी जागृति, मद्य निषेध आन्दोलन समाज सेवा पर्यावरण विकास, चिकित्सा

स्वास्थ्य, रूढ़ियों का खण्डन उद्यमिता) के साथ–साथ रंग्या महिलाओं की आधुनिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लर्नर के अनुसार ''आधुनिकीकरण परिवर्तन की वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों के समान विशेषताओं को प्राप्त करते है। आधुनिकीकरण की सबसे प्रमुख विशेषता मानवता का विकास है यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। जो साधनों के उपयोग पर आधारित होती है।'' भारत वर्ष के सुदूरवर्ती हिमालयी क्षेत्रों में आर्थिक आधार पर पारिवारिक सुदृढ़ता के लिए रंग्या महिलायें ऊन उद्योग को आधार वनाकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में ऊन उद्योग में नवीन तकनीकी के प्रभाव व भेड़ पालन के प्रति युवा पीढ़ी की अरूचि के साथ–साथ बाजार की सुगम उपलब्धता का होना इस धरेलू कुटीर उद्योग पर व्यापक प्रभाव डालता है।

अतः स्पष्ट होता है कि सुदूर उत्तर में हिमालय की उच्च उपत्यकाओं में भारत–तिब्बत सीमा पर अवस्थित एक महत्वपूर्ण सांस्कषतिक, राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सामाजिक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र जो प्रारम्भ से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है उसे भोट प्रदेश की दो घाटियों नीति व माणा के रूप में विशेष महत्व दिया गया। रांगपा जनजाति की संस्कृति, समाज एवं अर्थव्यवस्था में महिलोओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। परम्परागत समाज राजनीतिक चेतना व वर्तमान अर्थव्यवस्था के संकलन में महिलायें पुरूषों के समकक्ष सदृढ़ता से खडी है। कुशल शिल्पी होने के साथ–साथ शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण शैक्षिक स्तर में भी उल्लेखनीय प्रगति हुयी है। दूरस्थ क्षेत्रों में पेयजल, विद्युत, सौचालय, टेलीविजन, फोन आदि आधुनिक सुविधाओं से भी रंगपा महिलाओं के जीवन स्तर मे सुधार हुआ है। विवाह के प्रति महिलाओं की सोच अधिक सकारात्मक हो गई है, विवाह के सवैंधानिक आयु के प्रति सजग है। अंधिकाश रंगपा महिलाएं शिक्षा एवं रोजगार के लिये अपने गांवों से बाहर प्लायन कर रही है। रंगपा महिलाएं अधिकांश स्तपर पर आधुनिकता की ओरे उन्मुख है साथ ही अपने परम्परागत आचार–विचार तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति भी जागरूक है। रूढिवादी परम्पराओं में परिवर्तन, समाज की पूर्ण सहभागिता तथा क्षेत्रिय धरोहर को अक्षुब्द बनाये रखने के लिये सचेत है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. जोशी ए0के0, *भोटान्तिक जनजाति बरेली*।
2. प्रेमी वी0एम0, *हिमालय मे भारतीय संस्कृति*
3. *जन इतिहास लोक संस्कृति एवं समाज,* डा0विजय बहुगुणा, डा0 प्रह्लाद सिह रावत, प्रवीन कुमार भट्ट
4. *भक्त दर्शन, गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां* भाग–2
5. शिव प्रसाद डबराल, उ*त्तराखण्ड का इतिहास* भाग–7
6. योगेश धस्माना का गढ़वाल में जनजागरण व आंदोलनों का इतिहास।
7. *ई0टी0 एटकिन्सन गजेटिया ऑफ हिमालया डिस्ट्रिंक* 1976।
8. रूचि त्यागी–*ब्रिटिश कालीन गढ़वाल में शिक्षा व स्वास्थ्य की सार्वजनिक नीति*।